श्री वेंकटेश स्तोत्र- मूल पाठ (Venkatesh Stotra)

श्रीवेङ्कटेशस्तोत्रम्

कमलाकुचचूचुक कुङ्कुमतो नियतारुणितातुलनीलतनो ।
कमलायतलोचन लोकपते विजयी भव वेङ्कटशैलपते ॥ १॥

सचतुर्मुखषण्मुखपंचमुखप्रमुखाखिलदैवतमौलिमणे ।
शरणागतवत्सल सारनिधे परिपालय मां वृषशैलपते ॥ २॥

अतिवेलतया तव दुर्विषहै रनुवेलकृतैरपराधशतै ।
भरितं त्वरितं वृषशैलपते परया कृपया परिपाहि हरे ॥ ३॥

अधिवेङ्कटशैलमुदारमतेजनताभिमताधिकदानरतात् ।
परदेवतया गदितान्निगमैः कमलादयितान्न परं कलये ॥ ४॥

कलवेणुरवावशगोपवधू शतकोटिवृतात्स्मरकोटिसमात् ।
प्रतिवल्लविकाभिमतात्सुखदात् वसुदेवसुतान्न परं कलये ॥ ५॥

अभिरामगुणाकर दाशरथे जगदेकधनुर्धर धीरमते ।
रघुनायक राम रमेश विभो वरदो भव देव दयाजलधे ॥ ६॥

अवनीतनयाकमनीयकरं रजनीकरचारुमुखाम्बुरुहम् ।
रजनीचरराजतमोमिहिरं महनीयमहं रघुराममये ॥ ७॥

सुमुखं सुहृदं सुलभं सुखदं स्वनुजं च सुकायममोघशरम् ।
अपहाय रघूद्वहमन्यमहं न कथञ्चन कञ्चन जातु भजे ॥ ८॥

विना वेङ्कटेशं न नाथो न नाथः सदा वेङ्कटेशं स्मरामि स्मरामि ।
हरे वेङ्कटेश प्रसीद प्रसीद प्रियं वेङ्कटेश प्रयच्छ प्रयच्छ ॥ ९॥

अहं दूरतस्ते पदाम्भोजयुग्मप्रणामेच्छयाऽऽगत्य सेवां करोमि ।
सकृत्सेवया नित्यसेवाफलं त्वं प्रयच्छ प्रयच्छ प्रभो वेङ्कटेश ॥ १०॥

अज्ञानिना मया दोषानशेषान् विहितान् हरे ।
क्षमस्व त्वं क्षमस्व त्वं शेषशैलशिखामणे ॥ ११॥

॥ इति श्री वेङ्कटेश स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

रोमन लिपि में उच्चारण (Transliteration)

Kamala-kucha-chuchuka kunkumato
niyatarunitatula-nilatano |
Kamalayata-lochana lokapate
vijayI bhava venkata-shailapate || 1 ||

Sachaturmukha-shanmukha-panchamukha
pramukha-akhila-daivata-maulimane |
Sharanagata-vatsala sara-nidhe
paripAlaya mam vrsashaila-pate || 2 ||

Ativelaya tava durdvishhai
ranuvela-kritaira-aparadha-shatai |
Bhariitam tvariitam vrsha-shaila-pate
paraya kripaya paripahi Hare || 3 ||

Adhivenkata-shaila-mudara-mate
janatabhimatadhika-dana-ratat |
Paradeva-taya gaditanniamaiah
kamala-dayitan na param kalaye || 4 ||

Kalavenu-ravava-shagopa-vadhu
shata-koti-vritat-smara-koti-samat |
Prativallvika-bhimatasukha-dat
vasudeva-sutan na param kalaye || 5 ||

Abhirama-gunakara dashara-the
jagadeka-dhanur-dhara dhira-mate |
Raghunayaka Rama Ramesha vibho
varado bhava deva dayajaladhE || 6 ||

Avani-tanaya-kamaniya-karam
rajanI-kara-charu-mukhambujam |
Rajani-chara-raja-tamo-mihiram
mahaniyamaham Raghuramamaye || 7 ||

Sumukham suhridam sulabham sukhadam
svanuijam cha sukayam-amogha-sharam |
Apahaya raghu-udvaham-anyam-aham
na kathanchana kanchana jatu bhaje || 8 ||

Vina Venkatesham na natho na nathah
sada Venkatesham smarami smarami |
Hare Venkatesh prasida prasida
priyam Venkatesh prayacha prayacha || 9 ||

Aham durataste padambhoja-yugma
pranamechaya-gatya sevam karomi |
Sakrit-sevaya nitya-seva-phalam tvam
prayacha prayacha Prabho Venkatesh || 10 ||

Ajnanina maya doshana-shesaan
vihitan Hare |
Kshamasva tvam kshamasva tvam
shesha-shaila-shikhamane || 11 ||

|| Iti Shri Venkatesha Stotram Sampurnam ||

मराठी अर्थ- व्यंकटेश स्तोत्र (Venkatesh Stotra Marathi Arth)

केशराचा लेप लावलेले कमळासारखे वक्षस्थळ,
लालसर छटा आणि संतुलित निळसर शरीर.
कमळासारखे नेत्र असलेल्या, विश्वाच्या स्वामी,
हे व्यंकट पर्वताच्या अधिपती, तुमचा विजय असो. १ ॥

चार मुखे, सहा मुखे आणि पाच मुखे असलेल्या,
सर्व देवतांमध्ये श्रेष्ठ आणि मुकुटमणी.
शरणागतांवर प्रेम करणाऱ्या आणि करुणेचा सागर,
हे वृषाद्रीपती (वृषभ पर्वताच्या स्वामी), कृपया माझे रक्षण करा. २ ॥

तुमच्याकडे येण्यास मला विलंब झाला आहे,
मी सतत अनेक अपराध केले आहेत.
हे वृषाद्रीपती, कृपया तुमच्या असीम दयेने माझे रक्षण करा,
हे हरी, माझ्यावर कृपा करा. ३ ॥

व्यंकट पर्वताचे स्वामी अत्यंत उदार आहेत,
लोकांचा असाच विश्वास आहे.
वेद ज्यांचे वर्णन करतात, तेच सर्वश्रेष्ठ देव आहेत,
कलियुगात कमलनयना प्रभूंसारखा दुसरा कोणीही प्रिय नाही. ४ ॥

ज्यांनी बासरीच्या सुरांनी गोपींना वश केले,
कोट्यवधी लोकांमध्ये जे अद्वितीय आहेत.
गोपींना अत्यंत प्रिय असणारे,
हे वासुदेवा, कलियुगात माझ्यासाठी तुमच्याशिवाय दुसरे कोणीही नाही. ५ ॥

दशरथाचे पुत्र आणि अत्यंत मनोहर,
जगातील एकमेव श्रेष्ठ धनुर्धर आणि धीरगंभीर.
रघुवंशाचे नायक, राम आणि लक्ष्मीपती,
हे प्रभू, हे करुणेच्या सागरा, मला वरदान द्या. ६ ॥

सीतामातेचे (अवनीपुत्रीचे) सौंदर्य वाढवणारे,
ज्यांचा मुखकमल अत्यंत सुंदर आहे.

अज्ञानाचा अंधकार दूर करणारे,
हे रघुनाथा, मी तुम्हाला शरण आलो आहे. ७ ॥

सुंदर मुखाचे, स्नेही आणि प्रसन्न व्यक्तिमत्त्वाचे,
ज्यांनी अचूक बाण चालवून शत्रूचा नाश केला.
रघुनाथांशिवाय,
मी अन्य कोणाचीही उपासना करत नाही. ८ ॥

व्यंकटेशाशिवाय माझा दुसरा कोणीही स्वामी नाही,
मी सदैव व्यंकटेश प्रभूंचे स्मरण करतो.
हे व्यंकटेशा, कृपया,
हे व्यंकटेशा, मला माझ्या मनासारखे वरदान द्या. ९ ॥

मी दूरवरूनच तुमच्या चरणांना वंदन करतो,
नतमस्तक होऊन तुमची सेवा करण्याची इच्छा बाळगतो.
तुमची सेवा करणे हेच जीवनाचे सार्थक आहे,
हे व्यंकटेशा, मला हे वरदान द्या. १० ॥

अज्ञानामुळे माझ्या हातून असंख्य चुका घडल्या आहेत,
हे श्रीहरी.
मला क्षमा करा, मला क्षमा करा,
हे शेषशैलशिखरामणी ॥ ११ ॥

॥ हे संपूर्ण श्रीव्यंकटेश स्तोत्र आहे.

श्लोकों का हिंदी अर्थ (Word-by-Word Meaning)

श्लोक 1

अर्थ: हे वेंकट पर्वत के स्वामी! माता लक्ष्मी के वक्ष के कुंकुम से आपका नीला शरीर सदा लाल रंग से रंगा रहता है। आपके नेत्र कमल के समान विशाल और सुंदर हैं। आप समस्त संसार के पालनकर्ता हैं। आपकी जय हो।

श्लोक 2

अर्थ: हे वृषाचल पर्वत के स्वामी! चतुर्मुख ब्रह्मा, षण्मुख कार्तिकेय, पंचमुख गणपति - इन सभी प्रमुख देवताओं के मुकुट मणि आप ही हैं। आप शरणागतों का वत्सल भाव से पालन करने वाले हैं। आप सार के भंडार हैं। कृपया मेरी रक्षा करें।

श्लोक 3

अर्थ: हे वृषाचल पर्वत के स्वामी, हरे! मैंने अत्यंत असहनीय और बार-बार किए गए अनेक अपराधों से अपने आप को भर लिया है। हे प्रभु, मुझ पर अत्यंत करुणा करके शीघ्र ही मेरी रक्षा करें।

श्लोक 4

अर्थ: वेंकट पर्वत पर विराजमान, उदार बुद्धि वाले, जनता की इच्छाओं से अधिक दान करने वाले, वेदों द्वारा परम देवता कही जाने वाली और लक्ष्मी के प्रिय - इनसे परे मैं किसी को नहीं मानता।

श्लोक 5

अर्थ: मधुर वेणु की ध्वनि से गोपवधुओं को मोहने वाले, करोड़ों कामदेवों के समान सुंदर, सभी गोपियों के प्रिय, सुख देने वाले - उन वसुदेव-पुत्र श्रीकृष्ण से परे मैं किसी को नहीं मानता।

श्लोक 6

अर्थ: हे दशरथनंदन! हे समस्त सुंदर गुणों के भंडार! हे जगत के एकमात्र धनुर्धारी! हे धीर स्वभाव वाले! हे रघुकुल के नायक राम! हे रमेश! हे विभो! हे करुणा के सागर देव! आप मुझे वरदान दें।

श्लोक 7

अर्थ: मैं उन श्रीराम की वंदना करता हूं जिनके हाथ सीताजी के हाथों से सुशोभित हैं, जिनका मुख चंद्रमा के समान सुंदर कमल है, जो राक्षसराज रावण के तमस को सूर्य के समान नष्ट करने वाले हैं, और जो अत्यंत पूजनीय हैं।

श्लोक 8

अर्थ: सुंदर मुख वाले, सच्चे मित्र, सहज में मिलने वाले, सुख देने वाले, अपने अनुज (लक्ष्मण) सहित, सुंदर देह और अमोघ बाण वाले - उन रघुकुलभूषण राम को छोड़कर मैं किसी और की भक्ति कभी नहीं करूंगा।

श्लोक 9

अर्थ: वेंकटेश के बिना कोई नाथ नहीं, कोई स्वामी नहीं। मैं सदा वेंकटेश का स्मरण करता हूं, बारंबार स्मरण करता हूं। हे हरे वेंकटेश! प्रसन्न हों, प्रसन्न हों। हे प्रिय वेंकटेश! मुझे प्रदान करें, मुझे प्रदान करें।

श्लोक 10

अर्थ: मैं दूर से आपके दोनों चरण-कमलों को प्रणाम करने की इच्छा से आया हूं और सेवा कर रहा हूं। हे प्रभो वेंकटेश! एक बार की सेवा से ही नित्य सेवा का फल प्रदान करें, कृपा करके प्रदान करें।

श्लोक 11

अर्थ: हे हरे! मैं अज्ञानी हूं और मुझसे असंख्य दोष और अपराध हुए हैं। हे शेषाचल के शिखरमणि! आप क्षमा करें, आप क्षमा करें।

व्यंकटेश स्तोत्र का पाठ कब करें (When to Recite)

Venkatesh Stotra का पाठ निम्नलिखित अवसरों पर विशेष रूप से लाभकारी माना जाता है:

प्रतिदिन प्रातः काल - सुबह स्नान के बाद, सूर्योदय से पहले या सूर्योदय के समय इस स्तोत्र का पाठ करना सर्वोत्तम माना जाता है। इस समय मन शांत और ग्रहणशील होता है।

शुक्रवार और एकादशी - भगवान विष्णु और लक्ष्मी की उपासना के लिए शुक्रवार और एकादशी का दिन सर्वाधिक पवित्र माना जाता है। इन दिनों **Shri Venkatesh Stotra** का पाठ विशेष फलदायी होता है।

तिरुपति यात्रा से पूर्व - तिरुमला तिरुपति की यात्रा पर जाने से पहले इस स्तोत्र का पाठ करने की परंपरा है। भक्त इस स्तोत्र के माध्यम से भगवान से दर्शन की अनुमति मांगते हैं।

कठिन परिस्थितियों में - जब जीवन में कोई बड़ी समस्या हो, मन अशांत हो या किसी कार्य में बाधा आ रही हो, तब इस स्तोत्र का 11 या 21 बार पाठ करने से मन को शांति और समस्या से उबरने की शक्ति मिलती है।

सत्यनारायण पूजा या विष्णु पूजन - किसी भी वैष्णव पूजा के अवसर पर इस स्तोत्र का पाठ अत्यंत शुभ माना जाता है।